B.A.III 2012-13

<u>रसकासामान्यपरिचय</u>

रसकीपरिभाषा –

रसकेअंग (४)

स्थायी भाव संचारी भाव (३३) विभाव अनुभाव

१ शृगांररस

२ हास्यरस

३ करूणरस

४ रौद्र रस

५ वीररस

६ भयानकरस

७ बीभत्सरस

८ अदभूतरस

९ शांतरस

१0 वात्सल्यरस

आवलंबन उददीपन आश्रय (कार्य)

कारण

स्वकीयपरकीय

प्रा डॉ. काकासाहेबघाडगे

हिन्दीविभागप्रमुख

विज्ञानमहासांगोला

B.A.III 2014-15(Sem-VI)

2 छंदकासामान्यपरिचय

छंदकीपरिभाषा –

छंदकेप्रकार

वर्णीक छंद   मात्रिक छंद   लयात्मक छंद

दोहाछंद

विषमचरण १३ मात्राएँ

समचरण ११ मात्राएँ

मेरीभवबाधाहरै, राधानगरीसोइ ।

जातनकीझाई परै, श्यामहरितदुतिहोय ।

२ सोरठाछंद – दोहेकेविलोमछंदहै ।

३ चौपाई छंद –

४ वसंततिलकाआदीछंद –

प्रा डॉ. काकासाहेबघाडगे

हिन्दीविभागप्रमुख

विज्ञानमहासांगोला

B.A.III 2015-16(Sem-V)

३ आलोचना

परिभाषा –

आलोचनाकेगुण

↓

१ आंतरदृष्टियापैठ

२ पक्षापातशून्यता

३ विस्तृतज्ञान

४ सहानुभूति

५ प्रभावोत्पादकअभिव्यक्ति

६ सौदर्यनुभूतिकीक्षमता

७ शुध्दाचरण

८ प्रभावशालीव्यक्तित्व

९ निर्भिकता

१० निर्णयात्मकशक्ति

आलोचनाकेप्रकार

↓

१ व्याख्यात्मक

२ तुलनात्मकआदी

प्रा डॉ. काकासाहेबघाडगे

हिन्दीविभागप्रमुख

विज्ञानमहासांगोला

B.A.III 2016-17(Sem-V)

४ हिन्दीसाहित्यकाकालविभाजन

❖ जॉर्य ग्रयसन – ११ भागोमे –

१ चारणकाल

२ १५ वीशतिकाधार्मिक काल

३ जायसीकाप्रमोख्यानकाल

४ ब्रजकीकृष्णभक्तिधारा

५ मुघलदरबारकाकाल

६ तुलसीकाव्यकाल

७ रीतिकाव्यकाल

८ तुलसीकेपरवर्ती कवियोंकाकाल

९ १८ वीशतिका कार्यकाल

१0 कंपनीसरकारकाकाव्यकाल

११ विक्टोरीयाराणीकाशासनकाल

❖ मिश्रबन्धू – ५ भागोमे –

१ आरंभिककाल

२ माध्यमिककाल

३ अलंकृतकाल

४ परिवर्तनकाल

५ वर्तमानकाल

❖ रामचन्द्र शुक्ल – ४ भागोमे –

१ आदिकाल

२ भक्तिकाल

३ रीतिकाल

४ आधुनिककाल

❖ रामकुमारवर्मा –

❖ डॉ गणपतीचरणगुप्त – ३ भागोमे –

१ प्रारंभिककाल

२ मध्यकाल

३ आधुनिककाल –

१ भारतेन्दुयुग

२ व्दिवेदीयुग

३ छायावादीयुग

४ प्रगतीवादीकाव्य

५ प्रयोगवादीकाव्य

प्रा डॉ. काकासाहेबघाडगे

हिन्दीविभागप्रमुख

विज्ञानमहासांगोला

B.A.I 2017-18

५ कबीरकासामान्यपरिचय

१ व्यक्तित्व -

२ कृतित्व -

३ कबीरकेकुछदोहे - १0

१

जिहि घसटि प्रीति न प्रेम रस, फुनि रसना नही राम |

ते नर इस संसारमें, उपजिषयेबेकाम ||

२

खरताथातौ क्यूरह्या, अब करि क्यूपछताइ |

बोवैपेडबबूलका, अंबकहाँतैखाई |

३

कैसौकहाबिगाड़िया, जेमडैसौबार |

मनकौकाहेनमूंडिएजामैबिषैबिकार ||

४

ऐसीबाणीबोलिये, मनकाआपा खोइ |

अपनातनसीतलकरै, औरनकौंसुखहोइ ||

५

सातसमंदकीमसिकरौं, लेखनिसबबनराइ |

धरतीजबकागदकरौं, तऊ हरिगुणलिख्यानजाइ ||

६

कस्तूरीकुंडलिबसै, मृग ढूँढै बनमांहि |

ऐसैंघटिघटिरामहैं, दुनियादेखैनांहि |

७

निंदकनेडाराखिये, आंगणिकुटीबंधाइ |

बिनसाबणपाणीबिना, निरमलकरैसुभाई |

८

जालों इहैबडपणां, सरलैपेडिखजूरि |

पंखीछांहनबीसवैं, फललागैं ते दूरि ||

९

दिन भर रोजारहतहै, रातिहनतहैगाय |

यहतो खुन बह बंदगी, कैसेखुसीखुदाय |

१0

चन्दनकीकुटकीभली, नाँबबूरअँबरावं |

बैस्नोंकीछपरीभली, नासाकतबढगाँव ||

प्रा डॉ. काकासाहेबघाडगे

हिन्दीविभागप्रमुख

विज्ञानमहासांगोला

६ रहीमकासामान्यपरिचय

१ रहीमकाव्यक्तित्व –

२ रहीमकाकृतित्व –

३ नीतिपरकरहीमकेकुछदोहे –

१

कदलीसीपभुजंगमुख, स्वातीएकगुनतीन |
जैसीसंगतीबैठिये, तैसोई फलदीन ||

२

तरूवरफलनही खात है, सरवरपियहिंनपान |
कहिरहीमपरकाजहित, सम्पत्ति सँचहिंसुजान ||

३

रहिमनवेनरमरिचुके, जोकहुँ माँगनजाहि |
उनतेपहलेवेमुए, जिनमुखनिकसतनाहि ||

४

रहिमनदेखबडेनको, लघुनदीजियेडारि |
जहाँ कामआवेसुई, कहाकरैतरवारी ||

५

बिगरीबातबनैनही, लाखकरैकिनकोय |
रहिमनफाटेदूधको, मथेनमाखनहोय ||

प्रा डॉ. काकासाहेबघाडगे

हिन्दीविभागप्रमुख

विज्ञानमहासांगोला